Shodh Sangam Patrika
ISSN: 3049-0707 Volume 2 | Issue 1 | (Jan – Mar 2025)

असगर वजाहत के नाटकों में सांस्कृतिक चेतना का स्वरूप

गरिमा सिंह
शोध छात्रा, हिंदी एवं अन्य आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, उ. प्र.

सारांश:-

भारतीय संस्कृति एक सामासिक संस्कृति रही है। इसके निर्माण में बहुत लंबा समय लगा है, इसी कारण इसका एक मिलाजुला रूप दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विभिन्न धर्मों, जातियों और समुदायों के लोग यहाँ रहते हैं, फिर भी उनकी परंपराएँ, संस्कार, रीति-रिवाज, त्योहार और भाषाएँ अलग-अलग होने के बावजूद भारतीय संस्कृति में एक समरूपता दिखाई देती है। असगर वजाहत एक ऐसे नाटककार हैं, जिन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत किया है। उनके नाटक हिन्दू-मुस्लिम एकता की मिसाल पेश करते हैं और भारतीय सांस्कृतिक चेतना को और भी मजबूत बनाने में सराहनीय योगदान देते हैं।

बीज शब्द:- सांप्रदायिकता, सौहार्द, उदारवाद, समन्वय, कौमी एकता, भाईचारा, विभीषिका, ईश्वर, अल्लाह, मजहब, कौमी तराना, मानवीय मूल्य।

शोध विस्तार:- असग़र वजाहत अपने समय के प्रतिबद्ध नाटककारों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे अपने युग के यथार्थ को अपनी गहन संवेदनात्मक अनुभूति से अपनी रचना में प्रस्तुत करते हैं। इनके नाटक नवीन एवं समकालीन संदर्भों को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुए हैं। अपने नाटकों के माध्यम से इन्होंने समाजिक सांस्कृतिक वातावरण को प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि आज इनकी प्रासंगिकता बनी हुई है। असगर वजाहत के नाटकों में नाटकों में फिरंगी लौट आए (1970) जिन लाहौर नई देख्या ओ जन्म्याई नई (1989) गोडसे @ गांधी. कॉम (2011) महाबली (2019) ईश्वर अल्लाह (2020) पाकिस्तान में गांधी (2021) का महत्वपूर्ण स्थान है। फिरंगी लौट आए में सन 1857 की क्रांति निश्चय ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्रांति थी। जिसमें हिन्दू- मुसलमान दोनों ने मिलकर इस विद्रोह को अंजाम दिया। यह बात अलग है कि यह विद्रोह सफल नहीं हो पाया और भारत अंग्रेजों से मुक्त नहीं हो पाया। नाटक में अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ जनता का बगावत दिखाई देता है। कंपनी के फरमान के मुताबिक जनता को दस गुना लगान देनी पड़ती है। गांव में भूखमरी और अकाल व्याप्त है। सब अपने घर- परिवार को लेकर चिंतित हैं। इसी बीच एक आचार्य ने कैदियों को ईसाई की तालीम देना शुरू कर दिया है, इस कारण मुल्क में बगावत भड़क उठता। नाना साहब, देवा और मुल्ला अमानत मिलकर बागियों को संचालित करते हैं। हिन्दू और मुसलमान एकजुट होकर कंपनी के खिलाफ लड़ते हैं, परन्तु इस लड़ाई में मुहम्मद खाँ अड़चन पैदा करता है। नाटक के अंत में अवाम की खुशहाली के साथ ही महारानी विक्टोरिया का फरमान जारी होता है। नाटक जिन लाहौर नई देख्या ओ जन्म्याई का कथ्य भारत-पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। जहाँ लखनऊ से एक परिवार विस्थापित होकर लाहौर जाता है वहाँ पर उसे जो घर सरकार द्वारा मिलता है। उसमें एक वृद्ध महिला पहले से ही रह रही थी।उसका वह मूल घर था इसलिए अपना घर छोड़कर कहीं भी जाना नहीं चाहती थी। इस तरह नाटककार ने यहाँ यह दिखाया है कि धर्म एवं सांप्रदायिकता की आंधी में हजारों परिवार एक मुल्क से दूसरे मुल्क जाने के लिए विवश हैं। वहीं लाहौर की एक हवेली में रहने वाली वृद्ध महिला इन दंगों से अनजान है। जब विस्थापन के बाद भारत के लोगों को पाकिस्तान भेजा जाता है और उन्हें उस बूढ़ी स्त्री का घर मिल जाता है तो वह स्त्री इन दंगों से अनजान रहती है। इस कारण जब उसे कहा जाता है कि वह अपना घर छोड़ दे तो वह नहीं छोड़ती है। उसे अपने घर से इतना प्रेम है कि वह उसे छोड़ना नहीं

चाहती है। वह इन दंगों में अपने एक बेटे को भी खो चुकी है लेकिन एक घर में कैद होने और वृद्ध होने के कारण उसे इस बात का बिल्कुल एहसास भी नहीं है। नाटककार ने यहाँ धर्म और सांप्रदायिकता के बीच में प्रेम एवं मानवता को स्थान दिलाया है, जहाँ भारतीय परंपरा और मूल्यों की प्राणधारा प्रवाहित हो रही है। जबकि कुछ लोग लगातार जहर घोलने की कोशिश भी करते रहते हैं। नाटक इस बात पर बल देता है कि दुनिया में सबसे उत्तम विकल्प है एक दूसरे के धर्म का सम्मान करना और विविध धार्मिक समुदाय के सह-अस्तित्व को स्वीकार करना। असग़र वजाहत एक सफल नाटककार ही नहीं बल्कि कुशल रंगकर्मी भी हैं। यह नाटक सांप्रदायिक दंगों की समस्या का तथा उसके पीछे की समाज विरोधी तत्त्वों का भंडाफोड़ कर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाला यथार्थवादी नाटक है।

इसमें भारत- पाकिस्तान विभाजन के परिणामस्वरुप उपजी हुयी साम्प्रदायिकता एवं संवेदना का बहुत गहराई से चित्रण किया गया है। विभाजन भारतीय इतिहास की एक शर्मनाक एवं त्रासदीय घटना थी जिसके केन्द्र में कट्टरपंथी साम्प्रदायिक ताकतें, धार्मिकता, क्षेत्रीयता आदि मुख्य बिन्दु के विभाजन के कारण भारतीय जनमानस को बहुत भारी आघातों से गुजरना पड़ा तत्कालीन समय में यह घटना विश्व की सबसे बड़ी मानव त्रासदी के रुप में दर्ज की गयी। साम्प्रदायिकता हमारे समय का भयावह जहर था जो आज भी समाज में किसी न किसी रुप में विद्यमान दिखाई देता है। आजादी के बाद देश में कई साम्प्रदायिक घटनाएं होती रही है। लेखक ने साम्प्रदायिकता के बीच उभरते हुए मानवतावाद की ज्यों संकल्पना इस नाटक में प्रस्तुत की है। वह अपने आप में विशिष्ट है। बड़े से बड़े साम्प्रदायिक दंगों के बीच में भी कुछ लोग इन्सानियत, मानवतावाद व मूल्यों को छोड़ते नहीं हैं बल्कि उसे स्थापित करके समाज में नयी मिशाल प्रस्तुत करते हैं जो इस नाटक में साफ-साफ दिखायी देता है। नाटक की एक पात्र तन्नो के माध्यम से इसे दिखाया गया है। यह नाटक आजादी के बाद हुए विभाजन और जाति धर्म आदि के नाम पर हो रहे बर्बरतापूर्ण कृत्यों के बीच, इन्सानियत को जिंदा करता है।

अंध धार्मिक उन्माद के कारण मानवता शर्मसार होते दिखायी देती है जो मनुष्य को अविवेकी बना देती है। इसके कारण मनुष्य ऐसे कार्य करने लगता है जो कोई हिंसक पशु ही कर सकता है। वास्तव में साम्प्रदायिकता बर्बरता की जननी होती है। इस संदर्भ में आलोचक मैं नेजर पाण्डेय का यह कथन अत्यन्त प्रासंगिक प्रतीत होता है- "आज के भारतीय समाज में उक्त साम्प्रदायिकता की आंधी चल रही है। धर्म के नाम पर घृणा उन्माद द्वेष का प्रचार-प्रसार हो रहा है जाति भेद खूँखार जाति युद्ध बन रहा है। तरह-तरह के दुराग्रहों कट्टरताओं और संकीर्णताओं का बोल बाला है।"[1] इस कथन से स्पष्ट है कि किस तरह समाज में धर्म और बँटवारे की राजनीति में मनुष्य पिस रहा है, इन्सानियत से कोई लेना देना ही नहीं रह गया है। मनुष्य धर्म के नाम पर पिसता जा रहा है। आज दंगे फसाद आदि में लाखों लोग मारे जा रहे हैं वहीं लाखों लोग बेघर भी हो रहे हैं। जिन लाहौर नई देख्या नाटक में साम्प्रदायिक दंगों के कारण मनुष्य हैवान बन चुका है। कट्टरपंथियों द्वारा हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। बच्चे बूढ़े जिसके साथ भी अमानवीय कृत्य किया गया आम जनता जान बचाने के लिए अपने जन्म स्थान की तरफ भागने के लिए विवश हो रहे थे। इसी क्रम में सिंकदर मिर्जा का परिवार लखनऊ से लाहौर जाता है। वह अपना घर और सभी विरासत छोड़कर पाकिस्तान के लाहौर में शरणार्थी शिविर के कैम्प में रहता है। वहां उसे हिन्दुओं द्वारा छोड़े गये घरों को आवंटित किया जाता है। इसी क्रम में इसे भी लाहौर की हवेली अलाट कर दी जाती है जहां से पहले ही एक बूढ़ी स्त्री रह रही होती है। तनावपूर्ण माहौल में मुस्लिम लीग द्वारा वहां पर पाकिस्तान जिंदाबाद पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा सुनायी देता है। मिर्जा साहब अपनी बीवी हमीदा बेगम बेटी तनवीर बेगम और बेटा जावेद के साथ हवेली पहुंचते है। बाईस कमरों वाली हवेली का मुआयना करते हैं। तनवीर डरी हुई सहमी हुई ऊपरी मंजिल पर किसी बूढ़ी स्त्री के होने की बात कहती है। जब बेगम ऊपर जाकर रखती है तो वहां एक बूढ़ी स्त्री दिखाई देती है। हमीदा बेगम पूछती कि वह कौन

है, तो बूढ़ी स्त्री उसे अपने घर में पाकर उल्टा उससे ही सवाल करते हुए पूछती है कि वह कौन है और उसके घर में क्यों आयी है उसकी बातों से यह स्पष्ट है कि वह बूढी स्त्री उस हवेली की मालकिन है। रतन चौधरी और उसका परिवार साम्प्रदायिक दंगों की भेट चढ़ गया है। त्रासदी में वह बूढ़ी स्त्री अपने बेटे की प्रतीक्षा में वहीं रहती है की उसका बेटा जरूर आयेगा। इस तरह वह बूढ़ी स्त्री वहां से निकलने के लिए तैयार नहीं होती है। समाज का एक ही मूल रुप हमारे सामने स्पष्ट होता है कि यहाँ बूढ़ी स्त्री को परिस्थितियों ने आज कुछ ऐसा बना डाला है कि वह अपने घर में ही बेघर महसूस कर रही है। यह सांप्रदयिकता का सबसे निकृष्ट रूप जहाँ मनुष्य अपने ही घर में रहकर भी बेघर हो गया है।

बूढ़ी स्त्री कुछ दिनों बाद दिल्ली आने का फैसला करती है इतना सुनकर मोहल्ले के लोग उसे दिल्ली जाने से रोकते है। मिर्जा के बच्चे उसे दादी कहकर बूढ़ी स्त्री के गले से लगे जाते हैं। बूढ़ी स्त्री वर्षों बाद इतना प्यार पाकर दिल्ली जाने का फैसला त्याग देती है। इस तरह नाटक के अन्त में कथाकार ने मानवीय संवेदना को प्रस्तुत करके आज की भावी पीढ़ी को एक गहरा मानवीय संदेश दिया है जहाँ धर्म, मजहब व सांप्रदायिकता ताकतों के चलते लाखों जाने चली जाती है और लाखों लोग बेघर हो जातें है। लेकिन बूढ़ी माँ को उनके घर से वहाँ कोई भी बेदखल नहीं करता है। इसी तरह गोडसे @ गांधी.कॉम राजनीतिक नाटक है। पूरा नाटक गांधी जी और गोडसे के बीच राजनैतिक संवाद से भरा पड़ा है। इसमें गांधी और गोडसे के तर्कों को एक संवाद के जरिए दिखाया गया है। गांधी की हत्या करने के बाद गोडसे के मुखमंडल पर कोई पश्चाताप का भाव नहीं है। वह अपने उद्देश्य को महान भी मानता है क्योंकि उसके अनुसार भारत हिंदू राष्ट्र है, जो इस राष्ट्र को बनने में अवरोध पैदा करेगा उसको समाप्त कर दिया जाएगा। गांधी सधे शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं जहाँ इनके चेहरे पर किसी तरह का कोई भय नहीं है। गांधी जी लगातार उसे समझाते हैं लेकिन वह समझने को तैयार नहीं होता है। गांधी जी जब बच जाते हैं और नाथूराम गोडसे के मुकदमें में वे अदालत में बयान देने नहीं गए बल्कि उन्होंने अदालत को एक पत्र लिखकर दे दिया कि गोडसे और उसके साथियों को माफ कर दिया जाये। इसका नतीजा यह निकला कि मुकदमा कमजोर पड़ गया। नाटक के सीन-5 में यह उद्घोषणा है। गांधी जी नाथूराम को अपने हत्यारे के रूप में नहीं देखते हैं। नाटक के आरंभमें गांधी जी का कथन है कि आदमी परमात्मा की सबसे बड़ी रचना है। उसे समझने में समय लगता है और वे नाथूराम को भी समझना चाहते हैं। गांधी मानवतावादी दर्शन के पुजारी हैं इसलिए इनके भीतर एक विराट समन्वय दिखाई देता है। इसके पहले गोडसे@गांधी.कॉम भी गाँधीवादी विचारधारा पर आधारित था। नाटककार ने गांधी को पाकिस्तान जाने की और गांधी को गोली लगने के बाद गांधी के जिंदा रहने की मौलिक कल्पना की है जो अपने आप में अद्भुत है। यह नाटक गांधी और मुहम्मद जिन्ना के बीच के संबंधों को भी दिखाता है। गांधी पाकिस्तान जाते हैं और पाकिस्तान में कुछ लोग गांधी का समर्थन करते हैं, तो कुछ लोग विरोध करते हैं। गांधी पाकिस्तान को दूसरा देश नहीं बल्कि वह हिंदुस्तान का ही एक हिस्सा मानते हैं।

नाटककार ने अपनी कल्पना के माध्यम से इसमे राजनीति के कई रुपों के यथार्थ को दिखाया है। कुछ लोग गांधीवादी विचारधारा से असहमत होते हुए दिखाई देते हैं। नाटक उस समय चल रही राजनैतिक व्यवस्था को भी दर्शाता है। नाटक में विकास और साम्प्रदायिकता भी एक मुख्य मुद्दे के रुप में सामने आया है। मुस्लिम लीग द्वारा धर्म के आधार पर भारत के विभाजन की मांग का राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कड़ा विरोध किया था। उन्होंने कहा था की यदि पाकिस्तान बनता है तो में री लाश पर ही बनेगा। धीरे-धीरे हालात इतने बदलते चल गए की भारत का विभाजन होकर ही रहा और नया मुल्क पाकिस्तान बना। कट्टरवादी हिंदू संघटनों ने पाकिस्तान निर्मित के लिए गांधी जी को दोषी मानना शुरु किया जो नाटक के केंद्रीय पात्र नाथूराम गोडसे के इस संवाद से ये स्पष्ट होता है कि- "पाकिस्तान का पिता जिन्ना नहीं गांधी है। हिंदूओं का जितना अहित औरंगजेब ने न किया होगा उससे ज्यादा गांधी ने किया है,

पवित्र भूमि पर इस्लामी राष्ट्र का निर्माण उसकी ही नीतियों के कारण हुआ है।"[2] असग़र वजाहत नाटककार ने इस नाटक में महात्मा गांधी को विभाजन की त्रासदी के शिकार और इनके चरित्र हनन के दुष्परिणाम को चिंतित यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया है। महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों एवं उनके सिद्धान्तों की पुनरमूल्यांकित करने वाला यह एक विलक्षण नाटक है। नाटककार ने नाटक के शीर्षक में ही सूक्ष्म संकेत किया है कि यह नाटक गांधी और गोडसे के अन्तर्द्वन्द्व विचारधाराओं के आसमान रुप को प्रस्तुत करता है। गोडसे द्वारा गांधी की हत्या का पूर्ण प्रयास किया जाता है। लेकिन गांधी जी का बच जाना इस नाटक के महत्वपूर्ण अंशों में से एक है। गोडसे के व्यक्तित्व में जो अर्न्तविरोध पैदा होते हैं उसे भी नाटक में दिखाया गया है। एक कल्पना के माध्यम से नाटककार ने गांधी और गोडसे को एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है। दो भिन्न विचार धारा के व्यक्ति जब एक विचारधारा में विलीन हो जाते हैं तो उनके भीतर कैसी मानवीयता का जन्म होता है एवं उन दोनों के बीच हुये परिवर्तन को नाटककार ने साफ- साफ दिखाया है।

इसी तरह महाबली नाटक सत्ता और कला के द्वन्द्व को दिखाता है। नाटक में यह दिखाया गया है कि कलाकार शासक से अधिक शक्तिशाली होता है। शासक समय के साथ सीमित होता है जबकि रचनाकार या कलाकार इन बंधनों से परे होता है। इस नाटक के माध्यम से कला और सत्ता के द्वन्द्व को तुलसीदास और अकबर के माध्यम से दिखाया गया है कि किस प्रकार अकबर अपने आप को महाबली घोषित करते हैं और वे इसे कला मर्मज्ञ साहित्यकार तुलसीदास यह बता देना चाहते हैं कि रचनाकार से बड़ा शासक या सत्ता होती है। लेकिन जब तुलसीदास अकबर के प्रस्ताव को ठुकरा देते हैं और इनके दरबार में जाने से मना कर देते हैं तो अकबर को यह एहसास हो जाता है कि सत्ता से ज्यादा कला की प्रतिष्ठा है। नाटक के महाबली नाम रखने का यही मुख्य आधार है। नाटक में यह दिखाया गया है कि सम्राट अकबर ने तुलसीदास को सीकरी बुलाया था लेकिन तुलसीदास सीकरी नहीं गए। क्योंकि तुलसीदास बनारस तट पर बैठकर अपना सारा ध्यान साहित्य रचने में लगाते हैं। वहीं बादशाह अकबर यह चाहते हैं कि तुलसी इनके दरबार की शोभा बढ़ाए। क्योंकि अकबर अपने दरबार में उस समय एक से बढ़कर एक विद्वान रखते हैं और वो चाहते हैं कि तुलसी भी इनके आदेश का पालन करें। लेकिन तुलसी दरबार में ना जाकर लोक- व्यवहार में ही अपना ध्यान लगाते हैं। तुलसीदास जैसे स्वाभिमानी संत कवियों ने अकबर के प्रस्ताव को इनकार कर दिया और कभी भी सत्ता को स्वीकार नहीं किया तुलसी की मदद विशेषता वास्तव में अधिकांश संत कवियों की विशेषता है जो स्वाभिमान की राह पर चलते है। नाटक में मध्यकालीन ऐतिहासिक चरित्र को लेकर आधुनिक भावबोध को प्रस्तुत किया गया है। नाटक की एक सामान्य पात्र कमला के माध्यम से नाटककार ने यह नाटक हिन्दी में नया है। अब्दुलरहीम खान खाना, टोडरमल, तुलसीदास, अकबर ये सभी पात्र ऐतिहासिक है। अकबर मुगल शासकों में बाबर के बाद एक अच्छा नेतृत्वकर्ता या शासक था। अकबर की साहित्य और कला में गहरी रुचि होने के कारण उसने अपने दरबार में नवरत्न रखे जो अपने- अपने क्षेत्र के विद्वान थे अपने जिसमें हिन्दू से जैसे- टोडरमल, बीरबल, आदि प्रमुख थे अकबर अपने दरबार में नवरत्न रखे जो अपने- अपने क्षेत्र के विद्वान थे। अपने दरबार में तुलसीदास को भी अपने यहाँ सीकरी बुलाने का प्रस्ताव रखते हैं। लेकिन बाबा तुलसीदास जी सुख और सत्ता को ठुकरा देते हैं। महाबली नाटक का यह कथानक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। जिसमें कल्पना कि सहायता ली गई है। कभी सम्राट अकबर और महाकवि तुलसीदास की भेंट हुई थी लेकिन नाटककार ने राजसत्ता और कला के पारस्परिक संबंधों पर विस्तृत चर्चा करने के लिए इस नाटक में यह दिखाया है। नाटक में मुख्य पात्र सम्राट अकबर और महाकवि तुलसीदास है। वहीं अन्य पात्र अब्दुल रहीम खान- खाना और टोडरमल है

नाटक की शुरुआत सोलहवीं शताब्दी के बनारस के गलियों से होती है। सुबह का समय है गंगा जी पर उगता सूरज और रोशनी में चमकते हुए घाट दिखाई देते हैं। गली में तुलसीदास और उनके शिष्य रामू द्विवेदी जाते दिखाई देते हैं, उन दोनों में बातचीत हो रही है। इन दोनों के पीछे कुछ दूरी पर कमला देवी बुढ़िया इनका पीछा करती छुपी दिखाई देती है। गली में कमला देवी इनके सामने आ जाती है। कमला बहुत साहस के बाद इनके सामने आती है। कमला देवी अपनी बेटी के विवाद के लिए तुलसीदास से कुछ धन की अपेक्षा रखती है। नाटक में टोडरमल और अब्दुलरहीम खानखाना तुलसीदास के अभिन्न मित्रों में से है। कमला देवी जो एक सामान्य वर्ग है। तुलसीदास से कहती है कि आपके राम हमारी बेटी की शादी करायेंगे क्योंकि राम सबके रखने वाले है यहां नाटककार एक खास दृष्टिकोण से धार्मिक भावभूमि को प्रस्तुत करता है क्योंकि भारत आम व्यक्ति भगवान को ही अपने हर कार्यों का कर्ता धर्ता मानता है।

कमला देवी तुलसीदास से राम के उपर प्रश्न खड़ा कि क्या आपके राम हमारी बेटी का विवाह करवा देंगे इस कथन से स्पष्ट है कि कमला देवी तुलसी के राम की परीक्षा ले रही है। तुलसीदास कमला को एक पत्र लिखकर देते हैं और वह पत्र पाने के बाद अबुदररहीम खानखाना कमला को उसकी इच्छा के अनुसार धन देते हैं तुलसी ने उस पत्र में लिखा था- "सुरतिय, नरतिय, सब चाहे अस होय"[3] तुलसीदास पढ़ने के बाद रहीम कमला देवी को धन दे देते हैं और इसी लाइन जोड़ देते हैं। "गोद लिए तुलसी फिरै तुलसी सो सुत हुए"[4] इस तरह दो महान कवियों के बीच में संवाद भी दिखाई देता है।

रात का समय है तुलसीदास दीपक के सामने रामचरितमानस की चौपाइयों का पाठ कर रहे हैं। उसी समय उनके विरोधी लोग उन्हें गलियाँ शुरु कर देते हैं। उनके सामने हो विध्वंसी पात्र चन्द्रकान्त और भोला पण्डित सामने आते है। लोकभाषा मेरा मकथा की रचना के कारण तुलसी का विरोध होता है काशी के परपरांगत जड़ धर्मजीवी जो अपने आपको रानी सिद्ध करके लोगों को मूर्ख बनाते है। वे रामचरितमानस की रचना तुलसीदास के लोक भाषा (अवधी) में करने पर तुलसीदास का विरोध करते हैं। यहाँ जड़ मानसिकता को दिखाया गया है जहाँ लोग तार्किकता से परे रहकर अब भी समाज को जड़वादी और कूपमंडूप बनाये रखना चाहते हैं। नाटक में इसका यथार्थ इस रुप में प्रस्तुत हुआ है -

"चंद्रकान्त: संस्कृत देव भाषा है

तुलसीदास: हाँ महाराज

चंद्रकान्त: तुम रामकथा किस भाषा में लिख रहे हो।

तुलसीदास: अवधी में ...

चंद्रकान्त: संस्कृत और अवधी में कोई अंतर है

तुलसीदास: है महाराज क्यों नहीं है ?

चंद्रकान्त: मैं बताता हूँ क्या अंतर है संस्कृत देव भाषा है अवधी गली मोहल्ले के बीच से नीच यह भाषा बोल रहा है -इधर-उधर कितनी गंदगी है...पाप है व्यभिचार है...अधर्म है...लोभ है ...लालच है... दुराचार है...उसके

बीच राम को ले जाएगा।"[5] इस कथन से यह स्पष्ट रुप से दिखाई देता है कि धर्म और पाखण्ड की आड़ में पण्डित पुरोहित धर्म के नाम पर आम जनता के सामने धर्म को सीधे रुप में न पेरा करके उनसे अपना काम निकलवाना चाहती है और आम लोगों तक सच्चाई नहीं पहुंचने देना चाहती है वहीं तुलसीदास रामकथा की रचना करके ऐसे लोगों के लिए विरोधी बन जाते हैं और हर जगह उनका विरोध होता है

इसी तरह 'पाकिस्तान में गांधी' ऐतिहासिक भावभूमि पर आधारित नाटक यह असग़र वजाहत का सबसे कम समय में चर्चित होने वाले नाटकों में प्रमुख है। जिसको नाटककार ने अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से प्रमुख चरित्र गांधी को पाकिस्तान में जाने के लिए विवश किया है जहां विभाजन का दर्द झेल रहे तमाम परिवार उनसे मिलते हैं। विभाजन के बाद लाखों की संख्या में ऐसे लोग भी थे जिसका आधा परिवार भारत तथा में तथा आधा परिवार पाकिस्तान में था। दोनों मुल्कों के वैमनस्य के कारण लोग अपने परिवार से नहीं मिल पाते हैं। यह नाटक एक गहरी संवदेना हमारे मन मस्तिष्क पर उकेरती है। गांधी के समकालीन वो सभी राजनेता, अधिकारी किसान मजदूर, संगठन के लोग भी इस नाटक में अपनी अपनी ऐतिहासिक भूमिका को लेकर बड़े चिंतित दिखाई देते हैं। ये सरदार वालाभ भाई पटेल, पं.जवाहरलाल नेहरू, मोहम्मद अली जिन्ना, मौलाना आजाद आदि प्रमुख हैं। इन ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से नाटककार ने तत्कालीन समूचे परिदृश्य को उजागर किया है और एक अनूठी कल्पना के माध्यम से मानवता को जीवित किया है साथ ही भारत-पाकिस्तान दो विरोधी समझे जाने वाले मुल्कों को जोड़ा है। नाटक में यह दिखाया गया है की मोहम्मद अली जिन्ना के घर को जो भारत के मुंबई में है कस्टोडियन में रखा जाये या न रखा जाये इस पर बहस चल रही है। जिन्ना से पंण्डित जवाहर लाल नेहरू का लगभग चालीस वर्ष पुराना रिश्ता है। जिन्ना साहब नेहरू के पिता पंडित मोतीलाल के अभिन्न मित्र थे। वे आनन्द भवन में में हमान के रूप में रुक चुके हैं। इस कारण उनके प्रति पण्डित नेहरू के मन में सम्मान का भाव है, इसीलिए वो जिन्ना के मकान को कस्टोडियन में रखने से पूर्व काफी संशय में थे। नेहरू बार-बार अपने निजी सचिव एम.ओ. मथाई से इस विषय पर विचार विमर्श करते हैं, वहीं दूसरी तरफ सरदार वल्लभभाई पटेल अपने कड़े रूख अख्तियार करने के लिए जाने जाते थे। इसलिए पं. नेहरू और उनके बीच जब विचार विमर्श होता था तो सरदार पटेल स्पष्ट शब्दों में कहते थे कि जिन्ना के भवन को कस्टोडियन में ले लिया जाये। जैसे अन्य लोगों की सभी जायदाद उनके पाकिस्तान चले जाने के बाद कस्टोडियन ने ले लिया ठीक उसी प्रकार यह भवन भी ले लेना चाहिए। आज भी गांधी, नेहरू जैसे राजनेता पाकिस्तान के हित के बारे में सोचते हैं, वहीं पाकिस्तान के मोहम्मद अली जिन्ना भारत के बारे में सोचते हैं। नेहरू और जिन्ना के बीच एक विवाद की स्थिति जिन्ना हाउस को लेकर हो रही थी जो मुम्बई में स्थित है। जहाँ जिन्ना साहब की यादें रची बसी है। जहां हिन्दुस्तान के लिए जिन्ना साहब का दिल धड़कता है। वहीं नाटक में नेहरू के द्वन्द्व को दिखाया गया है। नेहरू से बार-बार संसद में यह प्रश्न पूछा जा रहा है कि जिन्ना हाउस को कस्टोडियन क्यों नहीं किया जा रहा है। वहीं जिन्ना साहब अपने घर को घर न मानकर यादों का एक सुनहरा घर मानते हैं। पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त श्री प्रकाश के माध्यम से यह पुछवाया जाता है कि आखिर जिन्ना हाउस का क्या किया जाये, तो जिन्ना साहब का जवाब सुनकर शायद यही एहसास होता है कि सच में जिन्ना को भारत से बहुत ज्यादा प्रेम था। नाटक में इस यथार्थ को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है- "श्री प्रकाश प्राइम मिनिस्टर ऑफिस से यह पूछा गया है कि मुंबई में आप के बंगले जिन्ना हाउस के बारे में आपने क्या फैसला किया है? पार्लियामें न्ट में बार-बार यह सवाल पूछा जाता है कि जिन्ना हाउस को कस्टोडियन में क्यों नहीं लिया जाता। सरकार के लिए इस सवाल का जवाब दे पाना मुश्किल हो जाता है। पंडित जी ने कहा है कि मैं आपसे पूछ कर उन्हें बताऊँ कि क्या जिन्ना हाउस कस्टोडियन में ले लिया जाए?

जिन्ना: श्री प्रकाश जवाहरलाल से कहो वह मेरा दिल न तोड़े, शायद तुम नहीं जानते हो कि बंबई को मैं कितना प्यार करता हूँ।"[6] नाटक में जिन्ना की यादों का एक संवेदनात्मक रूप दिखाई देता है। व्यक्ति का जहां बचपना गुजरा रहता है या व्यक्ति जहां से जुड़ा रहता है। वह स्थान उसे बहुत प्रिय होता है। नाटक में इसको अत्यन्त संवेदनात्मक रूप से नाटककार ने एक अन्यत्र स्थान पर जिन्ना ने अपने दर्द को जाहिर किया है। जहाँ हिंदुस्तान के लिए वे तड़प उठते दिख रहे हैं। वे श्री प्रकाश (पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त) से कहते हैं- "यह तुम बेशक जवाहरलाल से कह सकते हो बम्बई मुझे बहुत पसंद है ... मैं उस शहर से मोहब्बत करता हूँ उस शहर ने मुझे वह सब दिया है जो मैं चाहता था। उस शहर के बड़े एहसान है मेंरे ऊपर मुझे याद है पहली बार बचपन में जब मैं कराची से बम्बई गया था .. इसके बाद चरनी रोड के अपोलो रेलवे होटल का कमरा मुझे याद है जहाँ से एक सफर शुरू हुआ था ... ओरियण्टल क्लब मार्कर के साथ विलियर्ड और जिन्ना हाउस को तो मैंने समझ लो अपने हाथों से बनाया है...उसकी एक- एक ईंट और लकड़ी के एक- एक टुकड़े को मैंने खुद पसंद किया था। वहाँ सब कॉन्टीनेंट की हिस्ट्री लिखी गयी है"[7] नाटककार ने भारत पाकिस्तान मैंत्री संबन्धों को वास्तविक रूप में दिखाया है। जहाँ दोनों देशों के बीच में किसी भी तरह का कोई मनमुटाव नहीं है दोनों देशों के लोग परस्पर एक दूसरे के बारे में सोचते हैं। वहीं भारत से जब पाकिस्तान जाने की बात करते हैं तो उनके मन में भी पाकिस्तान के प्रति वहां रहने वाले लोगों के प्रति गहरी हमदर्दी है। गांधी जी पाकिस्तान को अपना छोटा भाई समझते है। अपने परिवार का अभिन्न अंग मानते हैं। शायद यही कारण है कि वे पाकिस्तान को सालिना पचपन करोड़ रूपये देने की बात करते हैं। गांधी जी स्पष्ट रूप से कहते हैं पाकिस्तान में शांति अमन चैन कायम होना चाहिए वे पाकिस्तान को अपना देश मानते हैं।

नाटककार को ईश्वर- अल्लाह नाटक लिखने की मूल प्रेरणा हज़रत गोस से मिली थी। यह नाटक सूफियों के जीवन संघर्ष को दिखाता है। ईश्वर अल्लाह नाटक का मूल कथानक यह है कि मौलवी के घर एक बच्चे का जन्म होता है, जन्म लेते ही बच्चे कि माँ मर जाती है। जिससे बच्चे को दूध पिलाने की समस्या आ जाती है। तभी अलीमुल्लाह को खबर मिलती है कि गाँव में पंडित गनेशी राम पांडे के यहाँ एक लड़की ने जन्म लिया है, तब मौलवी अलीमुल्लाह पंडित गनेशी राम पांडे के घर जाकर पंडिताइन से अपने बच्चे को दूध पिलाने को कहते हैं। पंडिताइन अलीमुल्लाह से सवाल करती हैं कि इस बच्चे को दूध पिलाने से मेरा क्या लाभ होगा। मौलवी अलीमुल्लाह कहते हैं बालक पर आपका वही अधिकार होगा जो अधिकार मेरा है। इस तरह उस बालक का पालन- पोषण संस्कार, संस्कृति दोनों धर्मों और सिद्धांतों को सीखते हुए होता है। पंडित गनेशी राम पांडे के यहाँ बालक का नाम दयाराम तथा मौलवी अलीमुल्लाह के यहाँ बरकत उल्ला खां रखा जाता है।

इसी तरह पंडित गनेशी राम पांडे के यहाँ हिन्दू धर्म ग्रंथों और मौलवी अलीमुल्लाह के यहाँ कुरान शरीफ पढ़ते हैं अंत में दयाराम इस निष्कर्ष पर पहुचतें है कि हिन्दू और मुस्लिम धर्म ग्रंथ एक ही हैं, सभी धर्मों का सार एक ही है। इस संदर्भ में यह कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है- "जाति या राष्ट्र की वे सब बाते जो उसके (मनुष्य) मन, रूचि, आचार- विचार कला-कौशल एवं सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक रहती हैं, संस्कृति के अन्तर्गत आती है।"[8] इस तरह असगर वजाहत के नाटकों में संस्कृतियों और धर्मों का मिलन होता हुआ दिखाई देता है

निष्कर्ष:- वे अपने समकालीन नाटककारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाटककार के रूप में स्थापित हैं। असग़र वजाहत ऐसे ही लेखन में अपने आप को स्थापित किया है। नब्बे के बाद के दशक में लिखा गया जिन लाहौर नई देख्या नाटक का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। नाटककार ने इस नाटक के जरिए भारत-पाकिस्तान के बंटवारे को अतार्किक बताया है

और उसके माध्यम से अत्यंत गंभीर समस्या को सामने लाया है। नाटक में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि बंटवारे के समय इंसानियत भी टुकड़ों में बंट गई थी जब कि यहाँ हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदाय के लोग गंगा-जमुनी संस्कृति की तरह आपस में प्यार से मिलजुल कर रहते थे। हमारी संस्कृति में इंसानियत को ही सबसे बड़ा गुण बताया गया है और धार्मिक रूढ़िवाद और कट्टरता को कठघरे में खड़ा किया गया है। यह नाटक यथार्थवादी है जिसमें पात्रों, संवादों व परिस्थितियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. कबीर की खोज, 2024, राजकिशोर,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 193
2. अली, डॉ. हैदर (सं.) 2022 असगर वजाहत के नाटक खंड-1, अनन्य प्रकाशन. दिल्ली. पृ.सं. 221
3. अली, डॉ. हैदर (सं.) 2022 असगर वजाहत के नाटक खंड-2, अनन्य प्रकाशन. दिल्ली.पृ.सं. 171
4. अली, डॉ. हैदर (सं.) 2022 असगर वजाहत के नाटक खंड-2, अनन्य प्रकाशन. दिल्ली पृ.सं. 176
5. अली, डॉ. हैदर (सं.) 2022 असगर वजाहत के नाटक खंड-2, अनन्य प्रकाशन. दिल्ली पृ.सं.179
6. वही, पृ.सं. 280
7. वही, पृ.सं. 280
8. नालन्दा, विशाल शब्द सागर, पृ.सं. 1388
9. अली, डॉ. हैदर (सं.) 2022 असगर वजाहत के नाटक खंड-2, अनन्य प्रकाशन. दिल्ली, पृ.सं. 279
10. वही, पृ.सं. 277
11. वही, पृ.सं. 277